HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-I, (The position of Church before Reformation)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 68

"धर्म सुधार आंदोलन से पहले चर्च की स्थिति"

(THE POSITION OF CHURCH BEFORE REFORMATION)

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

चर्च ने मध्यकाल में यूरोप को सांस्कृतिक तथा राजनीतिक एकता प्रदान की थी। मध्य यूरोप और पश्चिम यूरोप के निवासी रोम के कैथोलिक चर्च के अनुयायी थे। पूर्वी यूरोप तथा रूस के निवासी ग्रीक आर्थोडाक्स चर्च के अनुयायी थे। कैथोलिक चर्च में 16वीं शताब्दी में व्यापक सुधार आन्दोलन आरम्भ हुआ। जिसके दूरगामी परिणाम हुए और कैथोलिक चर्च में सुधार की मांग

करने वाले पृथकु रूप से प्रोटेस्टेन्ट कहलावे। रोम से उन्होंने सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया।

कैथोलिक चर्चे पर भी इस सुधार आंदोलन का प्रभाव पड़ा और कैथोलिक धर्म ने अपने को पुनर्गठित किया। कैथोलिक चर्च के इस पुनर्गठन को प्रति सुधार कहा जाता है।

रोम के कैथोलिक चर्च का 16वी शताब्दी के पूर्व यूरोप के मध्य तथा पश्चिमी भाग में सर्वोच्च स्थान था। चर्च की उत्पत्ति ईश्वरीय मानी जाती थी। चर्च के अधिकारियों की सत्ता राजाओं के ऊपर मानी जाती थी। यह विश्वास किया जाता था कि सामान्य धर्म और एक सामान्य नैतिकता मानव सभ्यता के विकास के लिये आवश्यक थी। यह भी माना जाता था कि व्यक्तियों को अपनी व्यक्तिगत इच्छा या विचारों की अपेक्षा धार्मिक एकता को महत्व देना चाहिए। 15वीं शताब्दी में पुनर्जागरण ने उपरोक्त स्थिति में परिवर्तन कर दिया। अब यूरोपवासियों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आ गया। अब वे चर्च के अंधविश्वास को न मानकर उन्हें तर्क तथा बौद्धिकता की कसौटी पर कसना चाहते थे। चर्च की एकता इस दृष्टिकोण के कारण समाप्त हो गई और उसका विघटन हो गया। 1520 से

Dr Gudday Kumari (A.N.D College)

1570 ई. के काल में उत्तरी जर्मनी, स्कैंडेनेविया उत्तरी नीदरलैण्ड, स्विट्जरलैण्ड का अधिकांश भाग, स्काटलैण्ड, इंग्लैण्ड, फ्रांस का कुछ भाग, हंगरी कैथोलिक चर्च से पृथक् हो गये।

चर्च का प्रभाव एवं संगठन - अपने अनुयायियों के जीवन पर कैथोलिक चर्च का पूरा नियन्त्रण था। चर्च के नियमों को प्रत्येक ईसाई को श्रद्धापूर्वक पालन करना पड़ता था। इस प्रकार चर्च को धार्मिक, राजनीतिक तथा सामाजिक सर्वोच्चता प्राप्त थी। इस सर्वोच्च स्थिति के निम्नलिखित कारण थे:-

(1) ईश्वरी संस्था-चर्च को ईसा मसीह द्वारा स्थापित ईश्वरी संस्था समझा जाता था। यह विश्वास किया जाता था कि चर्च के संरक्षण तथा उसके प्रमुख पोप के निर्देशन में ही मोक्ष प्राप्त करना सम्भव था।

(2) चर्च का व्यापक संगठन-चर्च का सम्पूर्ण पश्चिमी, मध्य यूरोप के राज्यों में व्यापक संगठन था। यह नगरों तथा ग्रामों में विस्तृत था। इन अधिकारियों में पादरी, विशप और आर्च विशप थे। इनके अतिरिक्त कार्डीनल थे जो पोप का निर्वाचन करते थे।

Dr Gudoy Kumari (A.N.D College)

पोप चर्च का मुख्य अधिकारी होता था जिसे सेंट पीटर का उत्तराधिकारी माना जाता था। वह रोम के निकट वेटिकन में रहता था।

(3) पोप की व्यापक शक्तियां- पोप विशाल शक्तियों से युक्त था जिनका कोई विरोध नहीं कर सकता था। वह ईसाई जगत का सर्वोच्च न्यायाधीश था। वह धार्मिक मामलों में सर्वोच्च प्रशासक था। उसके पास अपरीमित आर्थिक शक्तियाँ थीं। वह विभिन्न राज्यों में चर्च के अधिकारियों की नियुक्तियाँ करता था। जो केवल उसके प्रति निष्ठावान होते थे। वह अनेक सेवाओं की फीस लेता था। प्रत्येक विशप के क्षेत्र से धन प्राप्त करता और प्रत्येक ईसाई से पीटर पेन्स नामक कर लेता था।

(4) चर्च की संस्कार प्रणाली- संस्कार प्रणाली चर्च की बाह्य शक्ति का आधार थी। इन संस्कारों का प्रभाव प्रत्येक ईसाई के जीवन में था। ये संस्कार ईसाई धर्म शास्त्रों पर आधारित थे। ऐसा माना जाता था कि आत्मा की मुक्ति के लिए यह संस्कार आवश्यक थे। ये संस्कार सात थे- जन्म संस्कार, प्रमाणीकरण, प्रायश्चित, पवित्र यू का रेस्ट, अंतिम संस्कार मान्यता संस्कार, विवाह संस्कार। पादरी की सेवा इन संस्कारों के संपादन के लिए

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

अनिवार्य थी। इन्हीं संस्कारों के कारण धर्म का व्यक्तियों के जीवन पर जन्म से मृत्यु तक नियंत्रण रहता था। समान्य रूप से यह माना जाता था कि व्यक्ति राज्य के आदेशों की उपेक्षा कर सकता था लेकिन धार्मिक आदेशों की उपेक्षा नहीं कर सकता था।

चर्च की अथाह संपत्ति - कैथोलिक चर्च अत्यंत धनी संस्था थी। आय के विभिन्न स्रोत इसके पास थे। असंख्य जागीरे उसके पास थी। राज्यों में उसके पास विशाल भूमि तथा अचल संपत्ति थी। चर्च कई करो को जैसे टाइथ, फास्ट फ्रूट आदि को प्राप्त करती थी। यह आय इतनी अधिक होती थी कि पोप, विश्प आदि उच्च अधिकारी वैभव पूर्ण जीवन यापन करते थे।

धन्यवाद

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)